वैज्ञानिक अनुसंधान में देश में सिरमौर सीरी पिलानी

पिलानी . पिलानी स्थित सीरी कैंपस।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

पिलानी. शिक्षा नगरी पिलानी बेहतर शिक्षा के लिए तो विश्व भर में अपनी अनुठी पहचान रखती ही है यहां के वैज्ञानिक अनुसंधान ने भी अंचल को देश भर में गौरव दिलवाया है। कस्बे में संचालित केन्द्रीय इलेक्टोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा समय समय पर इजाद की गई तकनीक ने मानव जीवन को सुगम एवं उद्योग जगत को गति प्रदान की है। देश के उद्योग जगत एवं मानव सभ्यता को गति देने में सीरी संस्थान का देश भर में प्रथम स्थान पर है। सीरी (सीएसआईआर) की देश भर में 38 प्रयोगशाला संचालित है। पिछले दिनों सीएसआईआर ने देश भर की प्रयोगशालाओं द्वारा किए गये वैज्ञानिक अनुसंधानों का सर्वे करते हुए प्रयोगशालाओं के योगदान को आंका था। सर्वे में इन प्रयोग शलाओं द्वारा समय समय पर इजाद की गई इस प्रकार की 70 प्रौद्योगिकियों का चयन किया गया जिन की बदौलत मानव जीवन सुगम हुआ तथा उद्योग जगत को बल मिला।समय समय पर इजाद की गई प्रौद्योगियों में से सर्वाधिक प्रौद्योगिकयां सीरी संस्थान की मिली है। सीरी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा समय समय पर इजाद की गई तकनीकों से न केवल शेखावाटी का बल्कि राजस्थान प्रदेश का गौरव बढ़ा है। देश में वैज्ञानिक अनुसंधानों को गति देने के लिए तत्कालीन सरकार ने आजादी से पूर्व 26 सितम्बर 1942 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की स्थापना की थी। परिषद की स्थापना के बाद से ही देश में वैज्ञानिक अनुसंधान को बल मिला। वर्तमान में सीएसआईआर की देश भर में 38 प्रयोगशालाएं है। केन्द्रीय इलेक्टोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) सीएसआईआर की प्रयोग शालाओं में से एक है। सीरी संस्थान की स्थापना के लिए 21 सितम्बर 1953 में देश के प्रथम प्रधानमंत्री ज्वाहरलाल नेहरू ने भूमि पूजन कर आधारशिला रखी थी।

इनका कहना है-

सीएसआईआर सीरी ने अपनी स्थापना के बाद से ही देश के उद्योगों की अपने अनुसंधान से लाभांवित किया है। अत्याधुनिक शोध सुविधाओं के माध्यम यह संस्थान राष्ट को समर्पित है।

-डा पीसी पंचारिया , निदेशक सीरी संस्थान पिलानी।

ज्ञान-विज्ञान के बल पर 21 वीं सदी में बजेगा भारत का डंका

पिलानी.डॉ. पीसी पंचारिया, निदेशक 'सीरी'पिलानी।

पिलानी. लोकतांत्रिक मूल्यों में हमारी आस्था और विश्वास हम भारतीयों की सबसे बड़ी शक्ति है। आज सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने जीवन को पूरी तरह रूपांतरित कर दिया है। अन्य क्षेत्रों के साथ साथ विज्ञान में भी हमारी प्रगति उल्लेखनीय रही है। सीएसआईआर की स्थापना देश का गौरव बढाने के लिए मील का पत्थर बना। 1942 में देश में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सीएसआईआर की स्थापना की गई । आज सीएसआईआर की देशभर में 38 अनुसंधान प्रयोगशालाओं के माध्यम से देश को वैज्ञानिक शोध से लाभान्वित कर रहा है। उपग्रह संचार या सुपर कंप्यूटर या फिर खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भरता हासिल करने में सीएसआईआर की अहम भूमिका रही है। सुपर कंप्यूटर और उपग्रह विकसित कर उनके सफल प्रक्षेपण में भी महारत हासिल की है। देश के लिए पहले स्वदेशी टेलीविजन का विकास हो या स्वदेशी ट्रैक्टर, स्वदेशी हल्का विमान हो, मतदाताओं के लिए अमिट स्याही हो या पहली गर्भनिरोधक गोली, ऐसी अनेक उपलब्धियां सीएसआईआर की देश भर में फैली 38 राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाओं के सौजन्य से ही अर्जित की जा सकी हैं। सबसे बड़ा परिवर्तन जो हमारे जन जीवन में विगत कुछ वर्षों में आया है वह स्वयं पर विश्वास। निश्चित रूप से अब देशवासी स्वयं पर, अपनी व्यवस्था पर और अपने वैज्ञानिकों पर विश्वास करने लगे हैं। सरकार अपनी संस्थाओं की सफलता-असफलता पर साथ खड़ी रहती है। चंद्रयान-2 मिशन के अंतिम क्षणों में विक्र म लैंडर से संपर्क टूटने पर इसरो के नियंत्रण कक्ष में हतोत्साहित इसरो प्रमुख डॉ. के सिवन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा व्यक्तिश उपस्थित रह कर सांत्वना के भावुक पल आज भी हमारे मन-मस्तिष्क में ताजा हैं।हमारा देश अब न केवल बड़े साहसिक फैसले ले रहा है बल्कि देश की सामरिक आवश्यकताओं को देखते हुए हर संभव कदम उठा रहा है। डीआरडीओ द्वारा एंटी सैटलाइट मिसाइल परीक्षण हो या कम खर्चे में मंगल मिशन को पूरा करना हो, हमने हर क्षेत्र में अपनी धाक जमा कर भारत को विकसित और अग्रणी राष्ट्रों की कतार में खड़ा किया है। अंतत मुझे यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं कि हमें अपने इतिहास, अपनी संस्कृति और अपने पास उपलब्ध ज्ञान पर गर्व करना चाहिए। मेरा प्रबल विश्वास है कि जो देश अपने इतिहास, अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व नहीं करते वे धीरे-धीरे विलुप्त हो जाते हैं। यद्यपि भारत ने अब तक बहुत कुछ अर्जित किया है परंतु अभी भी बहुत कुछ अर्जित किया जाना शेष है। 19 वीं सदी ब्रिटिश उपनिवेशवाद की रही, 20 वीं सदी अमरीका की रही और जैसा कि अनेक सर्वेक्षणों के आधार पर विश्व के कई चिंतकों ने यह भी घोषणा कर दी है कि 21 वीं सदी एशिया की होगी।